



१३ नमः श्री ३ धर्मो भूतवाणी च त्रय ॥ १ ॥
अभाद्यदलदायिना वागमल्या संगम (हमधन
निर्ध नक कना गवाजा नमः शुभ ॥ १ ॥
मावदालिभ वागमल्या संगम सादि निर्ध
भाम सिखिना गवाजा नमः शुभ ॥ २ ॥ मनि

वादिना वागमल्या वृद्धभवा संगम संकन
निर्ध ईरवया वना गवाजा नमः शुभ ॥ ३ ॥
वाङ्मर्था वागमल्या संगम वाकनिर्ध सवुः
यना गवाजा नमः शुभ ॥ ४ ॥ विमवा सल्या
कं भवल्या संगम मनावम निर्ध क्विकनाग

वाङ्मयभाष्यम् ॥ ५ ॥ कस्यमावल्यां कस्यव
ल्यां संगम निमग्ननिर्ध अथवात्रनागवाङ्मयभा
ष्यम् ॥ ६ ॥ सवर्धवल्यां कस्यवल्यां संगम नि
धानकनिर्ध नशायनदनागवाङ्मयभाष्यम् ॥

न ॥ यागनामिकं कस्यवल्यां संगम ज्ञान
निर्ध वामकिनागवाङ्मयभाष्यम् ॥ ७ ॥
वागमल्यां कस्यवल्यां संगम ज्ञाना सवर्ध
नि संगम विनागनिर्ध ववर्धनागवाङ्म
यभाष्यम् ॥ ८ ॥ वागमल्यां नववर्ध

संगमं यमादतिथि यद्गनागवाजानभास्तु
न॥ १० ॥ वागमत्यां वागमत्यां संगमं सु
वक्रनतिथि महायद्गनागवाजानभास्तुन॥
११ ॥ वागमत्यां यरामत्यां संगमं जयतिथि
श्रीकाकिनागवाजानभास्तुन॥ १२ ॥ ॐ ॥

१३ ॥ अननकवागमकिनकक कक्कोटक यद्गम
हायद्गम शिवपालकलिक ववृणयावदव
निगहादवनी भामसिखिदद्वधवमहाद
मुधव अयवाव कुलनदीयनद सागर
महासागर अनवरक महानय श्रीका

किमहाकाकि सत्रयमहासत्रय रुडादिक
महादत्र किमिशमहामिनि आगच्छागच्छ
महानागमधियनया रुडवस्त्र दानयः
नि अमुकमः ०० रुडवस्त्र दिधवस्त्र धावायः
निधुस्त्र धीच आय आवाग्य धीवस्त्र धन

आज्ञायय निरुनरुं रुड अमुं यमि रुस्त्रादा
॥ ००० ॥ १००० सत्रयमिनि रुकव रुकव रुदह
यव रुदह रुदहि नि रुद रुद रुद रुद रुद रुद
धन रुधिवि रुधु रुकव रुनि रुद रुद रुद रुद
व रुव रुव रुधिवि रुद रुद रुद रुद रुद रुद रुद

लिप्त. कल २ गय २ रु ग व द सा मा दि त्य ऊ म
व नु द क वें ल व क्रे द ध न अ रि द व ग ना
ह्य चि त च व न क म रा य अ र्घ्य यु नि दृ स्ताः
हा ॥ १०० ॥ १३ नु मा वृ द्धा य ०० ए र
ग व न अ ह म म क्क वृ द्ध वि शो व न द स य नो

ग रा न ना क वि द न रु व पु न ख द म्मा सा च धिः
सा म्मा सा च द वा ना अ ना ग म ना अ म नू र्वा
ना अ वृ द्धा रु ग वा न ०० दं स य नु चै त्य अः
य यु नि दृ स्ता हा ॥ ॥ ०६०३० ॥
१३ अ य शी म न् शा क्क सिं ह न थ म ग न स्य वृ द्ध

कुरु रुद्रकल्या वैश्वमदना कथ हिमवनय
वैमवाहाया ल्वरुनत्वखेद कलिङ्गा ऊ
शुदिष्टा वा शुकिङ्कुर आकावरुयुधरु
मिनाया लदहा वाग मस्याया वायुवाकी
ना के भवत्यामा यश्चि म कथ संखनद्या

उरुवकथ एष पृष्ठगिरिवय खदुजया
रुमिशाला अनु कद वायय सुभ श्री ३ स्व
ययुवेत्य स निष्पन्ना ॥ ॥ ० ॥
रुमक कथायज कथा वायुस्व निष्पन्नाय
किस्वा लामा सखभा ऊदोस्वलिना वाजकि

धः॥ माथि मायावा अ कृता कावा दवा कडा मा मास सिगु
रुवा रव सि कर्ष वि न सा रा न रव ति थ न सा या रव स
मथ कवा अ कृ सा रा क द व सि गु न कृ ता र रव द
सा य मा न द्रा श सा रा दाना ग न सा य व ड सा रा वा
वा द्रा का द्रा म सि गु न कृ ता र रव द्रा अ व द्रा म

नृपक सत्रा



रखानमन शुक्ति ॥ ॐ मुनश्महा मनखाहा ॥ ॐ नभारुग
वनमसुदुर्गनियत्रिमाधनवाजायनथागनायाहक
संभक्तं वृद्धाय ॥ नयथा ॥ ॐ ह्यधनश्चिह्नधनशुद्ध
विशुद्ध दिवगनशुभकनामध्याय सर्वकम्पावयह
विह्यधनखाहा ॥ ॐ यथागनथागना नित्यमनूहवा

यां सम्यक्तं वाहो नथाहंय विह्यमीकयत्रिह्यमयामि ॥
विधुनसर्वसंकुयं तावासावविदक्तिन ह्यक्रसिंहनम
१स्यामि शुद्धयेकति निर्मलं समुद्धयुधुवीकारं स
वृद्धकनूधम्याहं समनरुदसाकात्र साक्रसिंहं नमा
मिहं ॥ अनेन वाहं कुशलकर्मना स्वयवृद्धनविच

ललाकदहाय धर्मजगन्नाथाय भावसत्त्वां वद्मद्
त्वयीति मां नित्यं मनूक्यायां सम्यक्वालो नथादय
विधामिनं यवीक्षामयामि ॥ ॥ इत्युक्त्वा मित्यमहा
यात्रात्यक्त्वा वेकनदीनदीत्यक्त्वा मां माय संयन न व
द्वयनमा मिहं ॥ ॐ ॥ नमः स्कंधाक्षसिंहाय ध

मचकपुवर्ककः ॥ नैधुर्कं जगत्सर्वं धर्मं सर्वदुःखं
किं ॥ नमः स्कंधाक्षीयधर्मधुस्वरावनः ॥ सर्वसत्त्वा
दिनार्थय आत्मनस्त्वय दक्षकः ॥ नमः स्कंधाक्षीयस
मनात्त्वरावने ॥ नैधुर्कं स्मिन् सर्वमस्मिन् कपुदा
यकः ॥ नमः स्कंधाक्षीयस्वरावययवयिरः ॥ आस्थाः

सयनिसखेषु धमामृकयवषहो॥नमः॥रुविस्वशीष
खरावदुक्तमनस्तिनः॥विस्वकर्मकयाश्रयांसत्वानां
॥४॥॥नमः॥रुक्तकाशीषकंधादुक्तंभराषयग
॥सर्वसखेषुआयषुसखेदृष्टाकविष्वाकि॥नमाः॥रुध
ऊडशीषविनामहिधऊधवः॥दानसर्वसत्वानांस

वासायवियुत्रयगु॥नमः॥रुनीष्वाशीषायकुं॥४॥॥नमः
वदुमावववरुयसत्वानांवाधियायगु॥नमः॥रुक्तका
शीषुआनयगु॥४॥॥नमः॥रुक्तकाशीषुआनयगु॥४॥॥नमः
ऊडशीषविनामहिधऊधवः॥दानसर्वसत्वानांस

वमल्लिङ्गनाथस्य मुकुटायाः सङ्कटकक्षाः शुद्धाननस्य
वनिज्जाम्बुद्वानया लनमसुक्तम् ॥ वदिकोऽपि लिङ्गनाथः
च तत्र विद्वावयाक्षकः ॥ मुदितायोदक्षलिङ्गनाथोऽपि
सत्वनमोऽसुक्तम् ॥ वाक्क्षेत्रोदवच्चादेलाकपालवहुदिक्ष
॥ अग्निवाकसवायश्चरुणाधियमिनमोऽसुक्तम् ॥ ॐ ॥

१३ स्वस्वागतायूंभिर्दमासनमाध्या
ना ॥ ॥ नमोऽस्तुते नमोऽस्तुते नमोऽस्तुते
सर्वदेवनादिनिर्गतावभासुदेवताना
यवनादेवानां गमसवायका गच्छवाम
होत्रग रूमायनायि ह्मवायाः सर्वत्राग

एयुजयन् सर्वयुजाययुक्कं बुद्धमान्
युगवर्त्तमानः॥ अहोबुद्धसाधुबुद्धश्चक्रे
नारुमः सर्वदुर्गनियन्त्रिमन्त्रसत्त्वानां
वाधियायान्नत्रकनियकथयु दीयाय
स्तान्ननामिथुदिकवृद्धकानां संगनिय

यान्॥ अथाथानुगानाः सर्वधर्माः यत्र स्या
नान्यविद्या सर्वधर्मा॥ अथानुयविद्या स
र्वधर्मा॥ उक्त्वा वृत्तवै॥ ३ ॥ उं सर्वविन्त्र
वृत्तवृत्तवृत्त ३॥ उं निष्ठवृत्तवृत्तवृत्तवृत्त
मृत्तामृत्तवृत्तवृत्तवृत्तवृत्तवृत्तवृत्तवृत्तवृत्त

दिभययुद्धं हृदहृदः ॥ र ग व न नि स व ज
स म य स्रं व ज व ह म ॥ ३ व र म स्रि व ३ ॥
३ स व वि न ह म ध न स व य य न य न थ ह
य म क व ह म ड ॥ ३ स व वि न स व य य वि
ह म ध नि ह ह ह ॥ य य वि ह म न म न ॥ ३ स

व वि न ग ट ट ह ॥ य य स्र ट न म ड ॥ ३ स व
वि न स व व र ह वि ह म ध न ह ह ह ॥ य य वि
स र न म न ॥ न न य स्र थ गि ना ह द य म ध
म काल न व उ म न ल ॥ ३ म न २ म हा म न स
ह ॥ ३ न थ स व द न नि य वि ह म ध न व ज

य तथ गानाया ह न सम्यक् वृद्धा य न यथ
उं ह म ध न २ वि ह म ध न २ गुं ह वि गुं ह दि व
ग न नाम ध या य स व क म्मा व व ह वि गुं ह
खा हा ॥ उं व ज्ञां कृ ह्म ४ उं व ज्ञा या हा ह्म ४ ॥
उं व ज्ञा ह्म ह वं ॥ उं व ज्ञा वं हा हा ॥ ॥ यं य

य हा व य ज्ञा ॥ ॥